Reg. No. BR/2025/0487469

TEACHERS OF BIHAR
The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

अगस्त 2025 | अंक 12

स्वतंत्रता दिवस
विशेषांक

ई-पत्रिका तक पहुँचने के लिए क्यू आर कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

padyapankaj.teachersofbihar.org

स्वतंत्रता दिवस विशेषांक

स्वतंत्रता का अर्थ केवल परतंत्रता की जंजीरों से मुक्ति भर नहीं है, बल्कि यह आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और उत्तरदायित्व की उस भावना का प्रतीक है जो हर नागरिक के भीतर सदा जीवित रहती है। स्वतंत्रता दिवस का पर्व हमें उन महान बलिदानों की याद दिलाता है, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर हमें खुली हवा में साँस लेने का अधिकार दिलाया। यह दिवस राष्ट्रप्रेम, कर्तव्य और सामूहिक एकता का पावन उत्सव है।

Teachers of Bihar की मासिक ई-पत्रिका पद्यपंकज का यह विशेषांक स्वतंत्रता दिवस को समर्पित है। इसमें शामिल रचनाएँ न केवल हमारे गौरवशाली इतिहास का स्मरण कराती हैं, बल्कि हमें यह भी प्रेरित करती हैं कि आज़ादी की असली परिभाषा तभी साकार होगी जब शिक्षा, समानता और नैतिक मूल्यों का प्रकाश हर घर-आँगन तक पहुँचे।

एक शिक्षक के रूप में हमारा उत्तरदायित्व और भी बड़ा है। हम केवल ज्ञान ही नहीं बाँटते, बल्कि भविष्य के नागरिक गढ़ते हैं। यही कारण है कि स्वतंत्रता दिवस हम सभी शिक्षकों के लिए और भी अर्थपूर्ण हो जाता है—यह हमें याद दिलाता है कि हमारी भूमिका राष्ट्रनिर्माण की आधारशिला है।

हम आशा करते हैं कि पद्यपंकज का यह अंक पाठकों के भीतर देशभक्ति की नई चेतना और समाजोत्थान की दृढ़ संकल्पना जगाएगा। आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद सहित

Team Teachers of Bihar

पद्यपंकज काव्य संग्रह

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

प्रधान संपादक

राम किशोर पाठक

प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा

संपादक एवं डिजाइन

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

प्रधान संपादक की कलम से

भारत माँ की जय सदा, गूँजित हो आकाश।
आँख उठाए शत्रु तो, उसका करें विनाश।।

सुधि पाठक गण,

सभी को वंदे मातरम् एवं ७९ वीं स्वतंत्रता दिवस की समस्त भारतवासियों को असीम शुभकामनाएँ। पद्यपंकज पत्रिका का यह अंक "स्वतंत्रता दिवस" विशेषांक के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि हम-सब ने माँ भारती के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय देते हुए हर्षोल्लास के इस पावन यज्ञ में अपने-अपने हिस्से की आहुति दी।

मित्रों! हम-सब जानते हैं कि यह पावन दिन असंख्य बलिदानों के साथ-साथ हमारे संघर्ष, सेवा, स्वाभिमान, सहयोग और शौर्य का प्रतिफल है। आजादी का अर्थ सिर्फ शासन के स्वरूप का परिवर्तन नहीं बल्कि समस्त भारतवासियों में आपसी सौहार्द्र और उन्नति है।

यह सच है कि आज हमारा देश वैश्विक पटल पर एक विशिष्ट पहचान बनाने में कामयाब हुआ है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, खेल, कला और साहित्य जैसे अनेक क्षेत्रों में हमने डंका बजा रखा है। आज भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में खड़ा हैं। तथापि आज भी गरीबी, अशिक्षा, असमानता और भ्रष्टाचार जैसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, जो भारत को विश्व गुरु बनने और सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में तैयार करने में बाधक सिद्ध हो रही है।

मित्रों! आइए आज हम-सब यह प्रण लें कि 'अपने-अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन स्वार्थ का परित्याग करते हुए राष्ट्रहित में करेंगे। हम जहाँ जिस रूप में कार्य करेंगे अपना बेहतर प्रदान करेंगे और स्वतंत्रता का अधिकार समानता आधारित रखेंगे साथ ही हम-सब मिलकर आत्मनिर्भर, सुरक्षित तथा समतामूलक समाज का निर्माण कर अपनी सांस्कृतिक विरासत तथा स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखेंगे।'

धार लेखनी में रहे, जैसे हो तलवार।
हम आजादी के लिए, कफन बाँध तैयार।।
मिलकर रखना है हमें, राष्ट्रभक्ति का सार।
राष्ट्रध्वज नभ में करे, भारत की जयकार।।

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है—जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ रश्मि प्रभा

संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

“पद्यपंकज” जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं “पद्यपंकज” पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,

विद्यालयी शिक्षा विभाग

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

अनुक्रमणिका

रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1. तिरंगा शान हमारी	प्रतिभा मिश्र	8
2. भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा	गिरिन्द्र मोहन झा	9
3. हाथ तिरंगा	रामपाल प्रसाद सिंह	10
4. राष्ट्र गान हम गायें	राम किशोर पाठक	11
5. सरहद पे खड़े हैं लेकर जज़्बा बलिदान का	बिंदु अग्रवाल	12
6. तिरंगा हमारी शान है	नीतू रानी	13
7. मधुमय देश बनाना है	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	14
8. यह भारत देश हमारा है	मनु कुमारी	15
9. तिरंगा देश की शान	आशीष अंबर	16
10. झंडोतोलन या ध्वजारोहण	विवेक कुमार	17
11. हमारा प्यारा हिंदुस्तान	शैलेंद्र भूषण	19
12. हमारा भारत	ख़ुशबू कुमारी	20
13. बलिदानियों के दम पर	अमरनाथ त्रिवेदी	21
14. स्वदेश पर मिटने वाले	रत्न प्रिया	23
15. आज़ादी	राम किशोर पाठक	24
16. भारत के नवनिहाल	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	25

तिरंगा शान हमारी

नर नारी खुश भारी,
बात करें प्यारी-प्यारी,
तिरंगा शान हमारी, गाते राष्ट्र गान है।
जय हिन्द बोल रहे,
मधुरस घोल रहे,
पौरुष को टोह कहे, भारती की शान है।
कल्पना साकार करें,
सुगम व्यापार करें,
सीमा का विचार करें, यह अभिमान है।
देशभक्ति मानते हैं,
नहीं कुछ जानते हैं,
भारत बखानते है, प्रतिभा का ज्ञान है।

प्रतिभा मिश्रा
प्रधान शिक्षक
प्रा. वि. त. आरा

भारत का राष्ट्रीय ध्वज-तिरंगा

भारत का राष्ट्रीय ध्वज महान तिरंगा है,
भारत की आन, बान और शान तिरंगा है,
इसकी अभिकल्पना सर्वप्रथम सन् 1921 में पिंगली वैंकेया ने की थी,
यह तिरंगा 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत हुई थी,
तिरंगा में होते हैं तीन रंग-केसरिया, श्वेत औ' हरा,
श्वेत रंग की पट्टी के बीच नीले रंग का है चक्र पड़ा,
कहता हूं कि इस अद्वितीय चक्र में चौबीस तीलियां होती है,
तिरंगा में सबकुछ है अर्थपूर्ण, कोई चीज यूं ही नहीं होती है,
केसरिया रंग की पट्टी देश की देश की शक्ति और साहस को दर्शाती है,
श्वेत रंग धर्म-चक्र संग शांति-सत्य का प्रतीक, हरा रंग देश के शुभ, विकास औ' उर्वरता को दिखाती है,
तिरंगे की लंबाई और चौड़ाई 3:2 के अनुपात में होती है,
इसकी इज्जत भारत के जन-जन के रुह औ' गात में होती है,
स्वतंत्रता दिवस-गणतंत्र दिवस के दिन इसे आदर से फहराया जाता है,
भारत के सम्मान के इस महान प्रतीक को खुले नभ में लहराया जाता है।

गिरीन्द्र मोहन झा
+2 शिक्षक, +2 भागीरत्ग उच्च विद्यालय, चैनपुर-पड़री, सहरसा

हाथ तिरंगा

भूली याद करा जाने को, मौसम आया है।
हाथ तिरंगा आज विभूषित,सबको भाया है।।
मन में हरियाली छाई है,
मस्त सभी जन हैं।
प्रेम-डोर में गुंफित माला,
पहने सब तन हैं।।
उन्मादित कर रहा गगन तक,शुभ-स्वर छाया है।
हाथ तिरंगा आज विभूषित,सबको भाया है।।
आगे खड़ा हिमालय चोटी,
पर चढ़ जाएँगें।
राह समंदर नहीं दिया पथ,
अलग बनायेंगे।।
बड़े कठिन से पूर्वज ने यह,मंजिल पाया है।
हाथ तिरंगा आज विभूषित,सबको भाया है।।
उम्रभेद सब अर्थहीन है,
संभाव सुखद है।
टूटे प्याले भेदभाव में,
माधुरी शहद है।।
हे ईश्वर!ऐसा ही रखना,बदली काया है।
हाथ तिरंगा आज विभूषित,सबको भाया है।।
गंगा-जमुना देख तिरंगे,
प्रीत बढ़ाते हैं।
सागर शीश उठाकर स्वागत,
गीत सुनाते हैं।।
लक्ष्य पूर्वजों ने यह कैसे, दम से पाया है।
हाथ तिरंगा आज विभूषित,सबको भाया है।।
पड़ी कालिमा की छाया को,
दूर भगा देंगे।
एक रहे हैं एक रहेंगे,
शपथ नेक लेंगे।।
राष्ट्र पर्व देवों को दुर्लभ, सच कहलाया है।
हाथ तिरंगा आज विभूषित,सबको भाया है।।

समपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
प्रधानाध्यापक मध्य विद्यालय दर्वे भदौर
पंडारक पटना बिहार

राष्ट्र गान हम गाएँ

मुक्तामणि छंद गीत

बच्चों में उत्साह को, भरने आगे आएँ।
मन हर्षित हो झूम ले, राष्ट्र गान हम गाएँ।।
आजादी के पर्व को, हम-सब आज मनाते।
वीरों के बलिदान को, सबको है बतलाते।।
सोने की चिड़ियाँ यहाँ, कैसे दिन बितायी।
पैरों में बेड़ी लिए, रहती शीश झुकायी।।
आज दिवस नव भोर की, सबको यह बतलाएँ।
मन हर्षित हो झूम ले, राष्ट्र गान हम गाएँ।।०१।।
हम-सब तो आजाद हैं, शीश दिएँ बलिदानी।
लाखों के निकले प्राण थे, सुन लो जरा कहानी।।
शान तिरंगा का रहें, अक्षुण्ण राजधानी।
आसमान में रह सके, अपनी अमिट निशानी।।

प्रहरी कल के हो तुम्ही, सबको बोध कराएँ।
मन हर्षित हो झूम ले, राष्ट्र गान हम गाएँ।।०२।।
पौरुष केशर सा रहे, दुश्मन भी थर्राए।
आए कैसी भी घड़ी, हिम्मत हम दिखलाए।।
कोई सरहद पर नजर, अपनी नहीं उठाए।
भारत ऐसी फिर बनें, जग को राह दिखाए।।
राष्ट्र भक्ति की गीत से, "पाठक" मीत बनाएँ।
मन हर्षित हो झूम ले, राष्ट्र गान हम गाएँ।।०३।।

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला,
बिहटा

सरहद पे खड़े हैं लेकर जज्बा बलिदान का

सरहद पे खड़े हैं लेकर जज्बा बलिदान का।
देश की आन पे करते हैं खुद को यूँ कुर्बान देखिए।।
न आँधी की परवाह न तूफानों का डर।
रखते हथेली पे हरदम अपनी जान देखिए।।
सिर्फ सैनिक नही हमारे ये धड़कन है देश की।
ये हैं हमारे देश की आन,बान और शान देखिये।।
देख हौसला जवानों का,दुश्मन तो क्या।
थर-थर काँपते है ज़लज़ले और तूफान देखिए।।
रखने को मान हमारे तिरंगे की,न जानें।
कितनों ने गंवाई अपनी ,जान देखिए।।
न हिंदू, न मुस्लिम, न सिख,न इसाई।
हर किसी के माथे पे लिखा है, हिंदुस्तान देखिए।।

बिंदु अग्रवाल
शिक्षिका मध्य विद्यालय गलगलिया

तिरंगा हमारी शान है

तीन रंग का मेरा झंडा
कितना सुन्दर प्यारा है,
इसको वीर सपूतों ने
मिलकर इसे संवारा है।
देखो ऊपर लहर रहा है
आसमान में फहर रहा है
देश -विदेश में टहल रहा है
कितना सुन्दर न्यारा है।
देखो इसमें तीन रंग हैं
केसरिया,सादा ,हरा
बीच में देखो गोल -गोल ये
ब्लू रंग का चक्र बना।
केसरिया साहस वीरता की निशानी
सादा है सच्चाई की,
हरा रंग हरियाली की है
हम सबके लिए खुशियाली की,
बीच में देखो बने चक्र को
इसमें हैं 24 लकीर,
ये लकीर दिन रातों की है
जिसपर चलते संत फकीर,
ब्लू रंग सदा सत्य की
राह पर तुम बढ़ते जाओ
पीछे न तुम मुड़कर देखना
यही है इसके सुन्दर प्रतीक।
इस पर है शान मुझे
और इस पर है अभियान मुझे,
अगर आ जाए इसपर कोई संकट
नहीं डर है देने में जान मुझे।
इसको स्वतंत्र करने में
कितने वीरों ने प्राण गंवाई है,
कितनी बहनों ने अपनी
माँग की सिन्दूर मिटाई है।
आओ इनकी जय-जयकार करें हम
और नित्य करें इसे नमन,
इस झंडे के नीचे निर्भय होकर
सब मिल गाएँ जन -गण-मन।

नीतू रानी
रहमत नगर सदर मुख्यालय पूर्णियाँ।

मधुमय देश बनाना है

सुरभित सुंदर संस्कार का अद्भुत देश हमारा है,
भगत सिंह , गाँधी सुभाष संग हमने भी दिल हारा है।
तरुणाई के प्रखर शौर्य को जनहित में रचने के लिये,
इस अवनी के अंधकार को हमने तो ललकारा है।
वीर सपूतों की थाती है क्रांति गीत की पाती है,
हमने उनकी क्रांति रश्मि को उषा किरण वन वारा है।
उठो चलो कि इस धरती का निश्छल नीरव प्राण बनें,
सर्वस्व न्योछावर कर हम सबको क्रांतिदूत बन जाना है।
क्यों ममता के आँचल में विषधर अबतक विषपान करे,
विषधर के समूल शमन को हम सबने अब ठाना है।
नहीं हुई है देर अभी भी, क्रांति अभी अधूरी है,
मातृ भूमि के कष्ट हरण को क्रांति सही ठिकाना है।
नहीं मिलेगा चैन तनिक भी शांति नहीं मिले पल भी,
जब तक जन जन के आंगन में देश प्रेम लहराना है।
जन जन आनंद, निश्छल निर्मल निर्विकार मन रचने के लिये,
कण कण, तृण तृण मोहक मधुमय अपना देश बनाना है।

डा. स्नेहलता द्विवेदी आर्या
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज
कटिहार

यह भारत देश हमारा है

यह भारत देश हमारा है,
यह प्राणों से भी प्यारा है।
यहाँ हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई ,
आपस में सब भाई- भाई हैं ।
हम साथ में रहते मिलजुलकर ,
पर करते नहीं लड़ाई हैं।
हमने मिलकर इस उपवन को,
बड़े प्रेम यत्न से संवारा है ।
ये भारत देश हमारा है ।
यह राम कृष्ण की है धरा,
इस धरती का है रंग हरा ।
इस देश के लोगों के मन में ,
भक्ति भाव सदियों से भरा।
यहाँ परोपकार को पुण्य मान,
जीवन में सबने उतारा है।
यह भारत देश हमारा है।।
यहाँ बहती गंगा यमुना की धार,
यहाँ गौतम बुद्ध लिए अवतार ।
यहाँ हिमालय पर्वत है पहरेदार ,
यहाँ हुए अनेकों आविष्कार।
यहाँ ऋषि – मुनि ने सद्ज्ञान देकर,
जन – जन के जीवन को संवारा है ।
यह भारत देश हमारा है।।

यह देश है प्रगति का प्रतीक !
इसका है गौरवशाली अतीत ।
यह महापुरुषों का जन्मस्थान ।
यहाँ नारी होतीं देवी समान।
यहाँ आसमान में लहराता,
तिरंगा अपना प्यारा है।
यह भारत देश हमारा है।।
यहाँ झरने गाते मधुर गीत ,
कोयल सिखलाती प्रेम प्रीत।
ये कर्म प्रधान है देश महान ,
यहाँ धर्म में सबका बसता प्राण।
यहाँ विविधता में एकता से,
चलता सदा गुजारा है।
यह भारत देश हमारा है।।
यह भूमि है वीरांगनाओं की,
सुन वीर सपूत महानों की ।
यहाँ नारी दुर्गा काली है,
या फिर बरसाने बाली है।
यहाँ देश की आन पे सेना ने ,
कुर्बानी हीं स्वीकारा है।
वो भारत देश हमारा है।।

मनु कुमारी
विशिष्ट शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय
दीपनगर बिचारी ,राघोपुर, सुपौल

तिरंगा देश की शान

तीन रंग से बना तिरंगा,
हमको लगता है प्यारा;
हिंदू – मुस्लिम – सिख – इसाई
की आँखों का तारा।
मंदिर – मस्जिद – गुरुद्वारा है,
यही तीरथ – धाम है;
बालक – वृद्ध , नर – नारी के,
अधरों की मुस्कान है।
कोई इसपर आँख उठाए,
हमको नही गँवारा;
तीन रंग से बना तिरंगा ,
हमको लगता प्यारा।
यह सपना है, यही हकीकत,
अंतर्मन अभिमान है;
इसे नहीं हम झुकने देंगें,
यही हमारी शान है।

झाँसी की रानी ने अपना ,
जीवन इसपर वारा ;
तीन रंग से बना तिरंगा ,
हमको लगता प्यारा।
यही धर्म है, यही कर्म है,
यही देश का अभिमान है;
यही प्राण है, यही आन है,
देश की पहचान है।
गाँधी , भगत, चाचा, सुभाष ने ,
अपना सबकुछ ही न्योछारा;
तीन रंग से बना तिरंगा,
हमको लगता प्यारा।
अपना प्यारा – न्यारा झंडा,
इसके बिना न होए गुजारा;
तीन रंग से बना तिरंगा,
हमको लगता प्यारा।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी
जिला – दरभंगा
बिहार

झंडोतोलन या ध्वजारोहण

आजादी का जश्न
मन में उठा प्रश्न
स्वतंत्रता दिवस पर
झंडोतोलन या ध्वजारोहण?
कौतूहल का शोर
रात से हो गई भोर
समझ नहीं पाया
कैसी है ये माया?

जानने की उत्कंठा से
चर्चा छिड़ा अपनों से
आखिर क्या है फर्क
इसका न था कोई तर्क?

चर्चा से
बातें और गहराई,
सुलझाने के चक्कर में
बातें और उलझाई,
सोचा क्या करूं भाई,
तब झंडा संहिता की याद आई।

पढ़ा और मिला ज्ञान
मैं था इससे अनजान,
बताता हूं इसकी पहचान
जानकार हो जाएंगे हैरान।

स्वतंत्रता दिवस पर,
ध्वजारोहण !
गणतंत्रता दिवस पर
झंडोतोलन!
इतने पर नहीं रुका,
उद्गार अभी भी था सूखा।

ध्वजारोहण में,
झंडा बंधता
पोल के नीचे,
बंधे झंडे को
नीचे से ले जाकर ऊपर
तब डोरी को खींचे।

झंडोतोलन में,
झंडा बंधता
पोल के ऊपर,
डोरी खींच उसे फहराते,
लहराता जैसे नभ पर।

गर्व है अपने झंडे पर
रखेंगे सदा इसका मान,
आज ध्वजारोहण पर
चलो करें इसका गुणगान।
हिन्दुस्तानी होने पर गर्व है,
भारत माता की जय बोलना फर्ज है।

विवेक कुमार
भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय
पुरुषोत्तमपुर, कुढ़नी, मुजफ्फरपुर,

हमारा प्यारा हिंदुस्तान

चंद्रकिरण से जग है जगमग
प्राची से उगता दिनमान
हरित देख वसुधा का आँचल
सबके होठों पर मुस्कान
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
जन्मभूमि यह वीरों की
जिसका करता जग गुणगान
राम,कृष्ण,महावीर,बुद्ध के
हुए धम्म चक्र अभियान
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
रहते हैं मिल-जुलकर सब ही
हिन्दू, मुस्लिम और क्रिस्तान
नहीं बैर मानव-मानव में
सादगी इसकी पहचान
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
शस्य-श्यामली धरती अपनी
जिसके कण-कण में भगवान
मानव में नव प्राण फूँकता
उपनिषदों,वेदों का ज्ञान,
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
गाँधी और सुभाष की धरती
करती हम सबका आह्वान
उठो राष्ट्र की बलिवेदी पर
अर्पित कर दो तन-मन-प्राण
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।

शैलेन्द्र भूषण
न. प्रा. वि. पकडिया भूमिहारी टोला
हरसिद्धि, पूर्वी चम्पारण

हमारा भारत

कहते हैं दादा-दादी और कहती है माई,
दशकों की गुलामी के बाद हमने यह आज़ादी पाई।
तिरंगा फहराने का सौभाग्य बहुत संघर्ष के बाद है आया,
कितनी मांओं ने बेटे और बहनों ने सुहाग गंवाया।
जब अंग्रेज करने लगे देशवासियों पर अत्याचार,
तब देश के वीरों ने हाथों में उठाई तलवार।
मातृभूमि की रक्षा का प्रण लिया मिलकर सबने,
तभी आज आज़ाद भारत में हम देख पा रहे हैं सपने।
सपने भारत को विश्वविजेता बनाने की,
सपने जीवन के हर दौड़ में अव्वल आने की,
पर क्या केवल सपनों से जीवन की नैया चल पाएगी?
धर्म के नाम पर लड़कर क्या मंज़िल मिल जाएगी?
आओ आज हम सब मिलकर यह प्रण दुहराएं,
तरक्की की राह में धर्म न आड़े आने पाए।
तब कोई दूसरा देश हमसे टकराने की हिम्मत न कर पाएगा,
हमारा भारत भी एक दिन विश्वविजेता कहलाएगा।

खुशबू कुमारी

मध्य विद्यालय गोला पंचायत जे पी
कॉलोनी मुजफ्फरपुर

बलिदानियों के दम पर

कर लें कितनी भी कोशिश ,वह कोशिश नहीं है भाती।
हो न दिल में जुनून जब तक अपना रंग नहीं जमाती।
बलिदानियों के दम पर भारत गुलामी से भी उबरा,
इससे सारे भारत में पहले मातम ही तो था पसरा।
तोड़ जंजीरें गुलामी की भारत का मान बढ़ाया ,
चलने के कंटक भरे मार्ग पर वीरों ने जोश जगाया।
लक्ष्मीबाई की वीरगाथा सबके दिलों को भाती ,
उनके पराक्रम पर तो कोटि सिर आज भी नवाती।
शौर्य कौशल लक्ष्मीबाई ने रणभूमि में बड़े दिखाए ,
उन जैसी वीरांगना कोई और भारत में न लख पाए।
बाबू कुंवर सिंह का पराक्रम अस्सी वर्षों में भी जागा ,
इस पुरुषार्थ के ही कारण सामने से अंग्रेज फौज भागा।
क्रांतिवीर खुदीराम बोस की लोग आज भी नाम लेते ,
उनके जुनून , जज्बा को लोग आज भी सम्मान देते।।
भगत , सुखदेव, राजगुरु क्रांतिकारियों के क्या कहने ,
इनके पराक्रम और तीक्ष्ण बुद्धि से अंग्रेज भी थे सहमे।
फांसी की सजा पर इन सपूतों का दिल न दहला ,
क्रांतिकारियों को फांसी देकर अंग्रेजों का मन बहला।

उस समय भी तीनों की लोकप्रियता आसमान छूते थे,
ऐसे कुकृत्य कर अंग्रेजों के भाग्य ही फूटे थे।
अशफाक , बिस्मिल , राजेंद्र , रौशन और चंद्रशेखर ,
ये सब थे क्रांतिवीर काकोरी कांड के मुख्य धुरंधर।
अपने प्राण अर्पण कर दिए मातृभूमि आजाद कराने में ,
क्या जुनून था इन सपूतों के स्वतंत्रता के दीप जलाने में।
आजाद हिंद के नायक सुभाष को कौन जानता नहीं है ,
इनके जुनून और वसूलों को कौन पहचानता नहीं है

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

स्वदेश पर मिटनेवाले

स्वतंत्र, समुन्नत देश के हम, नागरिक कहलाते हैं।
स्वदेश पर मिटनेवाले को, श्रद्धा-सुमन चढ़ाते हैं।
सन् सत्तावन याद करो, प्रथम आजादी संग्राम को,
जन-जन को झकझोरा जिसने, हर नगर हर ग्राम को,
लक्ष्मीबाई, वीर कुँवर व गूँजी मंगल की वाणी,
अंग्रेजों को धूल चटा वे, लिख गए अमर कहानी,
उनकी गौरव-गाथा से हम, नित प्रेरणा पाते हैं।
स्वदेश पर मिटनेवाले को, श्रद्धा-सुमन चढ़ाते हैं।
नवयुवकों ने रक्त से, भारत माता को सींचा है,
भगत, बिस्मिल, चंद्रशेखर सम पुष्पों का बगीचा है,
जालियाँबाग की कुर्बानी, इस मिट्टी में महक रही,
गुलामी के जंजीर से मुक्त हो, चिड़ियाँ चहक रही,
इस पावन मिट्टी का तिलक कर, हम धन्य हो जाते हैं।
स्वदेश पर मिटनेवाले को, श्रद्धा-सुमन चढ़ाते हैं।
जिन वीरों ने प्राण गँवाये, भारत माँ की शान में,
उनके बल से लहर रहा है, तिरंगा आसमान में,
स्वराज हमारे देश में, हम कहलाते स्वाधीन हैं,
पर, हालत यह देखो अपनी, मानो हम आधीन हैं,
विसंगतियाँ दूर करेंगे, ऐसी शपथ उठाते हैं।
स्वदेश पर मिटने वाले को, श्रद्धा- सुमन चढ़ाते हैं।

रत्ना प्रिया

उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

आजादी

महाचण्डिका छंद गीत

इसका अपना अर्थ है, सबको यह समझाइए।
आजादी के मूल्य को, जरा समझने आइए।।
सहते अत्याचार थे, ऐसा अपना देश था।
जानवरों सा हाल था, बदला सब परिवेश था।।
अपनी मर्जी से नहीं, करते कोई काम थे।
घायल तो हर शख्स था, हम-सब यहाँ गुलाम थे।।
वैसी हालत को कभी, पास नहीं बुलवाइए।
आजादी के मूल्य को, जरा समझने आइए।।०१।।
लाखों के बलिदान से, आया यह संयोग है।
अलग-थलग जब हो गए, जकड़ा तब यह रोग है।।
मंगल ग्रह की सैर को, सोच जगा जो आज है।
मंगल की वह क्रांति ही, इस युग का आगाज है।।
जानें वीर सुभाष को, बच्चों को बतलाइए।
आजादी के मूल्य को, जरा समझने आइए।।०२।।
भूल भगत आजाद को, लाल, बाल सह पाल को।
भूल गोखले को गए, उनके किए कमाल को।।
दिनकर की वह लेखनी, कहती हिंदुस्तान को।
टुकड़ों में जो बँट गए, पाएँगे अवसान को।
ताकत सबकी एकता, सबको यही सिखाइए।
आजादी के मूल्य को, जरा समझने आइए।।०३।।
शासन अपनों का यहाँ, अपना सभी समाज है।
शोषण फिर क्यों हो रहा, वही पुराना काज है।।
कुत्सित विचार हो गया, मनमानी की चाह में।
रोड़ा हम अटका रहे, आजादी की राह में।।
शान तिरंगा की रहे, जय भारत की गाइए।
आजादी के मूल्य को, जरा समझने आइए।।०४।।
मानवता ही धर्म है, "पाठक" का यह मर्म है।
आहत कोई हो नहीं, सीमा में हर कर्म है।।
समता एक विचार है, एक सूत्र में हार है।
मोती बिखरे तो सदा, रहता पड़े किनार है।।
शासन के इस दौर का, उर आनंद उठाइए।
आजादी के मूल्य को, जरा समझने आइए।।०५।।

राम किशोर पाठक
सियारामपुर, पालीगंज, पटना, बिहार।

भारत के नवनिहाल

भारत के नवनिहाल सुनो, गान देश का,
रखना तुन्हें संभाल है, स्वाभिमान देश का।
इस देश का मस्तक हमेशा, शान से रहे,
रखना है दिलोंजान से, खयाल देश का।
गाँधी सुभाष भगत सिंह ,अरमान देश का,
चहुँ ओर बढ़ रहा है ,सम्मान देश का।
इक्कीसवीं सदी हो रहा ,सुनाम देश का,
काँधे पर तुम्हारे है अब, निशान देश का।
वेद की ऋचाओं राम कृष्ण, की भूमि,
नानक गुरु रहें हमेशा, प्राण देश का।
बहुभाषा बहुधर्म बहुत नाम, देश का,
नाम प्यारा है हिंदुस्तान, देश का।
नई दिशा, नई तकनीकी ,नया रंग है,
हम छू रहें नया हैं आसमान ,देश का।
अंतरिक्ष या समुंद, या जल थल या नभ कहीं,
हर जगह फहरता रहे ,निशान देश का।
तुम हो सपूत देश के, देश सबका प्राण है,
है मातृभूमि में बसे, ईमान देश का,
कोटि नमन कोटिशः वन्दन , आ सभी करें,
लहरा रहा तिरंगा ,स्वाभिमान देश का।
भारत के नवनिहाल सुनो, गान देश का,
रखना तुन्हें संभाल है ,स्वाभिमान देश का..

डा. स्नेहलता द्विवेदी आर्या
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज
कटिहार

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com

padyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010

Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें